International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 5, September-October, 2025

समकालीन काल की कला एवं वस्तुनिरपेक्ष कला पर वैचारिक तर्क एवं चिंतन।

Dr Richa Jain

सारांश

सृजनात्मक कलाकृतियों के निर्माण में कलाकार अपनी भावनाओं तथा ललित कला के अनुभवों को लेकर कार्य करता है साथ ही वस्तुपरक वैज्ञानिक अन्वेषण को भी अपने निर्माण में प्रयोग करता है। समय-समय पर समकालीन कला की व्याख्या पर विचारकों के भिन्न मत रहें है। समकालीन शब्द का अर्थ एक प्रश्न का विषय बन गया है। समकालीनता को सीधे अर्थों में जाने तो इसका अर्थ है ''एक ही समय में समय के साथ'' अथवा ''समय के साथ चलते हुए।'' इसे आधुनिकता शब्द से जोड़ा गया। समकालीन कला का विचार व व्यवहार और आधुनिक कला को भिन्न रूपों में देखा जाता है। इसी वैचारिक मतों के बीच समकालीन शब्द एक जटिल विचार बना हुआ है। बीसवी शती में इन दोनो शब्दों के साथ एक नयी कला क्रान्ति ने अपने पैर पसारे वह थी 'वस्तुनिरपेक्ष कला' एक ऐसी कला जिसके ''एब्सट्रेक्ट'' या ''नॉनफिगरेटिव'' आर्ट भी कहते है। इसके प्रणेता के रूप में पश्चिमी कलाकार कन्डिस्की एवं मोन्द्रियान जाने जाते है। हालांकि इसका बीज प्राचीन कलाओं में आलेखन व अलंकरण में दिखने लगा था। प्रभाववाद, घनवाद, अभिव्यंजनावाद भी इस क्रान्ति के सहायक माने गये है। चित्र में घनत्व, शून्यत्व, स्थैर्य और गति में सन्तुलन बनाकर आकारों, रंगो व रेखाओं से इसका निर्माण किया जाता है। क्षणों मे सीमित सौन्दर्यानुभूति को ही आज की कला में आनन्द माना जाता है। वस्तुनिरपेक्षत्व जिसका आधार तत्व बन गया है। 1906 से 1914 का समय विशेष रूप से आधुनिक कला में महत्वपूर्ण रहा है। कान्ड़िस्कि की पुस्तक 'कला में अत्मिकता'' कला को वस्तुसादृश्य के बंधन से मुक्त कराने में सहायक रही है। वर्तमान कला क्षेत्र में देश विदेश में अमूर्त अर्थात् एब्सट्रैक्ट कला का परचम लहरा रहा है। जोकि कलाकार व दर्शकों के मध्य आनन्द का संबंध बनाने में सफल है।

शब्द कूंची:- रचनाशीलता, समकालीन, भावमूलक, यर्थात्मूलक, संवेगात्मक, वस्तुनिरपेक्षत्व, नॉन-फिगरेटिव, भौतिकवाद, रहस्यानुभवी, आत्मतत्व, घनत्व, शून्यत्व, चित्रकार, विकास, विशुद्धवादी, दृष्टिकोण, सृष्टि, चैतन्य, स्वातंत्रय, सृर्जनशक्ति।

प्रस्तावनाः मनुष्य अपनी कलात्मक रचनाशीलता के आरम्भ होने के समय से ही मुख्यतः दो प्रकार की अभिवृत्तियों: 'भावमूलक' एवं 'यर्थाथमूलक' से प्रेरित रहा है। यह अभिवृत्तियाँ परिवर्तनशील है किन्तु कला सृजना के मूल में विद्यमान है। एक तरफ कलाकार अपनी भावना तथा ललित कल्पना की संवेगात्मक लहर के साथ सृजन करता है वहीं दूसरी तरफ वस्तुपरक वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में कलाकृतियों का निर्माण करता है। समकालीन कला में कला विचार और कल्पनाओं का असीम संसार रच बस गया है। किन्तु समकालीन कला में ''समकालीन शब्द'' के अर्थ को समझना भी आज के कला वातावरण में एक प्रश्न बन गया है। आज की भारतीय कला में समकालीन के नये अर्थ को समझने व समझाने के पहले ''समकालीनता'' पर विचार करना होगा। इस शब्द पर व्याख्या करें तो सीधा-सीधा अर्थ है-''एक ही समय में समय के साथ'' या ''समय के साथ चलते हुए। कुछ हद तक इसे दूसरे शब्दों में 'आधुनिक कला' शब्द से भी जोड़ा गया है। किन्तु वर्तमान में 'समकालीन कला' का विचार व व्यवहार भिन्न रूप में परिभाषित होता है। शब्द पर विचार करें तो अर्थ अलग है किन्तु अर्थ पर विचार किया जाये तो समान ही स्वीकारा जायेगा। इसी वैचारिक मतों के बीच समकालीन शब्द एक जटिल विचार बना हुआ है। समकालीन और आधुनिक कला के साथ ही एक अन्य कला अपने अस्तित्व इनके अर्थो में समाहित करने में कार्यशील रही है जिसे कहा जाता है- ''वस्तुनिरपेक्ष अथवा अमूर्त कला''।

र0वि0 साखलकर ने लिखा है-'जिस कला में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भौतिक वस्तु के रूप की ओर कोई संकेत नहीं होता ऐसी कला को इंगिश भाषा में 'एब्सट्रेक्ट' या 'नॉन फिगरेटिव' कला कहते है। एब्सट्रेक्ट का मूल अर्थ है ''सारतत्व निकालना''। कुछ विद्वान इस शब्द के प्रयोग के विरूद्ध विचार रखते है। उनके अनुसार इस शब्द की व्याख्या अप्रत्यक्ष रूप से वास्तविकता की रूपजन्य अनुभूति की ओर ही निर्देश करता हैइसलिए वह ''नॉन फिगरेटिव'' शब्द को सारभूत मानते है। वस्तु निरपेक्ष कला के आरम्भिक काल में वस्तु-सृष्टि के बाह्यय रूप से प्रेरणा लेकर किन्तु प्रत्यक्ष दर्शन से बाह्यय रूप को गौण करके कलाकृतियों की रचना की गयी थी। कुछ समय बाद इन कलाकृतियों को 'एब्सट्रैक्ट कला' में सम्मलित कर लिया गया। नॉन-फिगरेटिव व एब्स्ट्रेक्ट शब्द एक दूसरे के पूरक प्रयोग में भी परिभाषित होते प्रतीत होते है। जैस मोंद्रियान ने अपनी कलाकृतियाँपूर्ण रूप से काल्पनिक व ज्यामितीया आकारों से रची है। जिन्हे 'एब्सट्रेक्ट' शब्द में जोडा गया हालांकि उनकी कृतियों को पूर्ण रूप से 'नॉनफिगरेटिव' कला कहना अधिक न्यायियक है। इस आलेख में दोनों के लिए 'वस्तुनिरपेक्ष' शब्द का प्रयोग किया गया है। यद्यपि कुछ लेखक 'अप्रतिरूपवादी' या अमूर्त शब्द का प्रयोग भी करते है। वस्तुनिरपेक्ष आकारों के सौन्दर्य की अनुभूति कोई नयी कल्पना नहीं है यद्यपि वस्तुनिरपेक्ष कला बीसवी शताब्दी की एक महत्वपूर्ण देन मानी गयी है।

वस्तुनिरपेक्ष अथवा अमूर्त कला में विचार और भावाभिव्यक्ति की प्रधानता पर विचार

साहित्य और संगीत की तरह चाक्षुक कलायें भी आन्तरिक सत्य को प्रकाशित करती है। कलाकार वस्तु के आन्तरिक गुण का ही प्रत्यक्षीकरण करता है, बाह्य रूप का नहीं। इस दृष्टि से कलाकार की तुलना रहस्यानुभवी से की जा सकती है क्योंकि वह नवीनता की खोज में अनुभवों के आधार पर ही 'सर्जक' बन जाता है। सर्जन क्या है? सृजन आत्म और विषय वस्तु के काल्पनिक संयोग का परिणाम है। प्रत्येक सृजन में उसी प्रकार भेद होता है जिस दृष्टि से कलाकार स्वयं को सर्जक के रूप में देखता है, अनुभवों को रूपान्तरित करता है।

समकालीन अमूर्त कला में कलाकार स्वयं को पारम्परिक बंधनों से मुक्त कर स्वतंत्र विचारों के लोक में विचरण करता है। वह आन्तरिक चाक्षुओं द्वारा वस्तु के स्वभाव को आत्मसात् करते हुए स्वयं को बँधनो से मुक्त रखता है। प्रकृति की नकल नहीं करता और नही वस्तु के साम्य से कोई लगाव रखता है। प्रकृति उसके अनुभव की वस्तु बन जाती है। वस्तु के मूल तत्वों द्वारा आकार का सृजन ही समकालीन कलाकार की मूल रचना पद्धति रही है जिसके द्वारा वह वस्तु का चित्रात्मक प्रत्यक्षीकरण करता है। वह न केवल विषयवस्तु के चाक्षुष स्वभाव को निश्चित करता है बल्कि रंग, रुप, धरातल और उभार आदि सभी चाक्षुष गुणों को निर्दिष्ट करते हुए नई दिशा, नये भाव और नये विचार प्रदान करता है। कलाकार की कूँची के प्रत्येक स्पर्श या घातों से निजि स्वभाव का प्रत्यक्षीकरण होता है। इन तूलिका घातों में आवश्यक है कि अन्तराल पर चित्र में घनत्व, शून्यत्व, स्थैर्य और गति में सन्तुलन बनाये रखना। इस प्रकार अमूर्तन कलाकृतियाँ ज्ञेय और अज्ञेय के बीच अपूर्ण सम्बंध स्थापित करती है।

विषयवस्तु के सारतत्व एवं चैतन्य की अभिव्यक्ति तभी सम्भव हो सकती है जब कलाकार उसके साथ पूरी तादात्मय स्थापित कर लेता है। इस क्रिया में आन्तरिक सत्य को पूरी तरह आत्मसात् कर लेना आवश्यक है। इस आत्मतत्व के खो जाने पर किसी भी प्रकार की कुशलता या कौशल कलाकृति को निष्प्राण होने से नहीं बचा सकती। समकालीन कलाकारों ने इसी आन्तरिक आत्म रहस्य और चेतना शक्ति को पहचानने के साथ ही भावों को धरातल पर उड़ेलकर रख दिया है। परम्परा की जंजीरो ने जिस प्रकार तत्कालीन कला को जकड़ रखा था उससे मुक्ति पाने की प्रक्रिया से ही अमूर्तन व अन्य समकालीन आधुनिक विधाओं का जन्म हुआ। बृद्धि, विचार, और हृदय के सार्थक संयोग से ही कला में पूर्णता आती है। यह स्वभाव को निश्चित ही नहीं करता है बल्कि रंग, रूप, धरातल और उभार आदि से सभी चाक्षुक पक्षों को प्रस्तुत करता है। समकालीन कलाकार इसी विचार पर कार्यरत् है।

वर्तमान कला परिदृश्य में मोटे रूप से भारत में ही नहीं, विश्व में भी दो तरह की प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती है। एक में तो कलाकार हैं जो इस तरह की कलाकृतियाँ रचने में लगे है जो आकृतियाँ व वस्तुपरक चित्रों में आते है जैसे बाजार, रेलवेस्टेशन, नदी-पुल, इमारत, साधारण जन-जीवन, पार्क, शोषित गरीब वर्ग, अस्त-व्यस्त जीवन आदि। दूसरी ओर उपर्युक्त विषयों से विपरीत विषय जिसमे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भौतिक वस्तुओं का संकेत नहीं होता अर्थात् भौतिक तत्वों से रहित वस्तुनिरपेक्ष चित्र दिखाई देते है। जो सहज ज्ञान या अन्तर्मन की क्रिया एवं सहयोग से जनित है। इनके सृजन में विद्यमान क्षण में उपलब्ध ऐन्द्रिक अनुभूति से प्रेरित और अत्यधिक संवेदनशीलता के साथ किया जाने वाला चित्रण है। ये कलाकार यर्थाथ को भौतिक जगत से नहीं जोड़ते, जानबूझकर किसी विषय को चित्रित नहीं करते। कलाकार वस्तु सादृश्य के बाह्य लक्षणों से मुक्त होकर अपने सौन्दर्याभिव्यक्ति के स्वभाविक सामर्थ्य को प्राप्त करने की चेष्टा में रत् रहते है। कलाकार वस्तुनिरपेक्ष गुणों अर्थात्- रंग, रेखा, धरातल आदि मूल तत्वों के अन्तंरिक विचार को ध्यान में रखकर कार्य कर रहें हैं। इनके अनुसार वस्तु के बाह्य रूप से सुख की अनुभूति होती है तो आन्तरिक चिन्तन से जीवन। दोनो प्रवृत्तियाँ एक साथ उपस्थित रहने से यह भ्रम भी होता है कि यह सभी समकालीन ही तो है किन्तु मूल भावना और बिना विचार के किये जाने वाला सृजन तथा विचार के साथ किये जाने वाले चित्रण में एक बड़ा सेतू है जिसको समझना जटिल है।

कला के इतिहास में कलाकार का सदैव द्विविध दृष्टिकोण रहा है- एक तरफ विषय प्रतिपादन के उद्देश्य से वस्तुसादृश्य का विचार व दूसरी तरफ सौन्दर्य व अभिव्यक्ति के सामर्थ्य को बढ़ाने के उद्देश्य से वस्तुनिरपेक्ष गुणों के विकास का विचार दोनों दृष्टिकोणो को अलग कर सकना दुस्साहस पूर्ण था। इसी पृथक्करण में वस्तुनिरपेक्ष कला का जन्म हुआ। सर्वप्रथम प्लेटो ने वस्तुनिरपेक्ष सौन्दर्य का विचार करके लिखा कि- ''वृत और आयात ऐसे आकार है जो किसी बाह्यकय कारण से या उपयुक्तता की वजह से सुन्दर नही होते बल्कि सौन्दर्य उनकी प्रकृति है एवं उनसे ऐसी सौन्दर्यानुभूति होती है जो निरिच्छ, निरविकार है, इस प्रकार रंगो के विशुद्ध प्रयोग में भी यह सुन्दर है''

बीसवीं शताब्दी में सृजनात्मकता में जीवन दर्शन से विचलित विचार व वस्तुनिरपेक्षत्व

बीसवी शताब्दी में भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, उद्योग एवं सामाजिक व आर्थिक क्षेत्रों में विकास को अकल्पित गति प्राप्त हुई, दूरगामी वेगवान यातायात के साधनों का आविष्कार हुआ और देश-विदेश के बीचका अन्तर नगण्य होकर वैचारिक व सांस्कृतिक आदान-प्रदान होने लगा। बदलती हुई परिस्थिति के अनुकूल कला को नया विश्वव्यापी रूप प्राप्त होना अपरिहार्य था, यह रूप था- ''वस्तुनिरपेक्ष कला'' इस कला का प्रभाव शहर निर्माण, भवन निर्माण, औद्योगिक कला, हस्तकला, साज-सज्जा आदि मानव के सभी सृजन क्षेत्रों पर दिखायी देता है। बीसवी शताब्दी के मानव का जीवन दर्शन, आदर्शवाद से विचलित होकर अस्तित्ववादी बन गया। क्षणों में सीमित सौन्दर्यानुभूति को ही आज का मानव सत्य मानता है, अतः वस्तुनिरपेक्षत्व बीसवी सदी का आधारभूत तत्व गया है, इसमें कोई आश्चर्य की जगह नहीं है।

इस विशाल परिवर्तन को एक दिन, एक वर्ष या एक समय की क्रन्ति नहीं कहेंगे क्योंकि इसके पीछे प्राचीन विचारकों के मत महत्व रखते हैं जैसे बोदलेर व बॉल्जाक के लेखों में समकालीन कला की भविष्य में वस्तुनिरपेक्षता में परिणति होने की घनिष्ठ सम्भावना को सूचित किया था। प्रभाववादी, उत्तर प्रभाववादी एवं फाववादी अंकनपद्धतियों में वस्तु निरपेक्षता की ओर अविचारित प्रगति थी। प्रभाववादियों ने चित्र के पूरे प्रभाव को अपना लक्ष्य बनाकर वस्तु के वैयाक्तित्व महत्व को कम कर दिया एवं अपनी मुक्त अंकनशैली से रंगो के सौन्दर्य व सतह की बुनावट की ओर कलाकारों व कला प्रेमियो का ध्यान आकर्षित किया। फाव व अभिव्यजंनावादी चित्रकारों ने इससे आगे बढ़कर चित्र में रंगो के स्वभाविक सौन्दर्य का विकास करने के उद्देश्य से वस्तु के नैसर्गिक वर्ण की पूर्ण उपेक्षा करके रंगो का विस्तृत क्षेत्र में व केवल रंग संगति व प्रतीकात्मकता का विचार करके प्रयोग किया तथा रेखा के अभिव्यक्ति के स्वभाविक सामर्थ्य को कार्यान्वित करने के उद्देश्य से सरलीकृत एवं ऐंठनदार रेखाकंन शुरू किया। घनवादी व भविष्यवादी कलाकारों ने ज्यामितीय आकारों का प्रयोग शुरू किया और वें वस्तुनिरपेक्षता के समीप पहुँच गये। इस प्रकार बीसवीं शताब्दी में रंग, रेखा व आकारों ने वस्तुनिरपेक्ष कला के अर्न्तगत वस्तु सादृश्य के बाह्यय लक्ष्य से मुक्त होकर अपने सौन्दर्याभिव्यक्ति के स्वभाविक सामर्थ्य को प्राप्त किया।

वस्तुनिरपेक्ष कला विचार, क्रान्ति एवं विशुद्धवादी दृष्टिकोण
प्राचीन कला में भी केवल समतल वस्तुनिरपेक्ष आकारों द्वारा चित्रण किया गया किन्तु उसका प्रभाव मुख्य रूप से अलंकारिक रहा एवं मानवीय भावनाओं को व्याकुल करने में असमर्थ ही था। जिसके उदाहरण प्राचीन चीनी मीट्टी के बर्तनों का अलंकरण। रेखा, रंग, व आकारों के सुन्दर संयोजन से वस्तुनिरपेक्ष कलाकृति का निर्माण नहीं होता अपितु उसके गौण में भावनाओं का उद्दीपन होता है। वह कलाकृतियाँ बाह्य रूप में वस्तुनिरपेक्ष होते हुए भी सृष्टि के आंतरिक चैतन्य से ओत-प्रोत होनी चाहिए। आधुनिक कलाकार शेपनहौर ने लिखा है-''सभी कलाएँ संगीत की ओर परवर्तित है'' इस विचार से आधुनिक कलाकारों को संगीत-सादृश्य वस्तुनिरपेक्षता की दिशा में प्रयोग करने को प्रोत्साहित किया। आधुनिक कलाकारों द्वारा किये गये संगीत के अध्ययन से एवं कला के साथ संगीत की तुलना से कला वस्तुनिरेपक्षता की ओर अधिक तेजी से गतिमान हुई। बीसवी शताब्दी के आरम्भ में कलाकारों ने विशुद्धतावादी दृष्टिकोण अपनाकर कला के मूल तत्वों का बाह्य उद्देश्य से पृथक विचार शुरू किया एवं उनके स्वभाविक विकास पर ध्यान केन्द्रित किया, परिणामस्वरूप वस्तुसादृश्य, विचारदर्शन, कथन, संदेश, प्रचार, प्रसंागिक महत्व आदि बाह्य उद्देश्यो का महत्व संकुचित होता गया और अन्त में कला को पूर्ण रूप से वस्तुनिरपेक्ष रूप प्राप्त हुआ।

कन्डिस्किी व मोंद्रियान को वस्तुनिरपेक्ष कला के प्रणेताओं का स्थान दिया जाता है यद्यपि वस्तुनिरपेक्ष कला काफी समय तक कलाक्षेत्र में चलती हुई क्रन्ति की परिणति थी। कन्डिस्किी ने अपना प्रथम वस्तुनिरपेक्ष चित्र 1910 में जलंरगों में चित्रित किया। उस समय वस्तुनिरपेक्षता के विचार से ऐसी जागृति पैदा हुई थी कि विभिन्न कलाकारों ने स्वतंत्र रूप से वस्तुनिरपेक्ष कलाकृतियाँ बनायी। 1911 में मास्को में लारियोनोव ने, 1912 में देलोन व कुपका ने वस्तुनिरपेक्ष कृतियाँ बनायी। 1913 में बनाये गये लेज़े के चित्र 'आकारो का विरोध' व देलोन की सुरीलवादी कलाकृतियाँ वस्तुनिरपेक्षता को बल देती गयी। यद्यपि दोनों की कला का उद्गम वास्तविकता के दृश्यसौन्दर्य की अनुभूति था। कन्डिस्किी से पहले भी कुछ चित्रकारों ने अपवादात्मक वस्तुनिरपेक्ष कृतियों का निर्माण किया था। 1893 में डच चित्रकार 'हेनरी वान डे वेलेड' ने मासिक पत्रिका के लिये कुछ वस्तुनिरपेक्ष काष्ठ-खुदाई का चित्रण किया। 1896 में औगुस्ट एंडेल ने म्यूनिख के एक छाया-चित्रकार की दुकान के आगे के भाग पर वस्तुनिरपेक्ष आकृतियाँ चित्र की। 1906 में होल्सेल ने वस्तुनिरपेक्ष चित्रण का प्रयोग किया। 1907 में मार्क ने अपने प्रयोग के बारे में लिखा''यर्थात् वस्तु का विचार किये बिना केवल रंगो द्वारा चित्रण करके देखना चाहिए।''

1906 से 1914 के बीच के काल में वस्तुनिरपेक्ष कला के ध्येय को सही स्वरूप प्राप्त हुआ। कान्ड़िस्कि ने अपने कार्यकक्ष में उलटे रखे हुए निजि चित्र से वस्तुनिरपेक्ष सौन्दर्य का साक्षात्कार किया। मोन्द्रियान ने दैंनदिनी में लिखा- ''यदि वस्तु के बाह्य रूप से सुख प्राप्त होता है,तो आन्तरिक चैतन्य से जीवन''। देलोनने 'समयावच्छेदी खिडकियाँ' चित्रित करके वस्तुनिरपेक्षता की ओर महत्वपूर्ण कदम उठाया, कान्ड़िस्किने इस विषय पर अन्तिम निर्णय दिया-'' कला में हर बात का स्वातंत्रय है।'' आधुनिक कला के इतिहास में 1912 का वर्ष खलबलीपूर्ण रहा। घनवाद विकास के अंतिम बिंदु तक पहुँचा था एवं मोन्द्रियान ने घनवाद का अध्ययन करके नवलचीलवाद की दिशा में कदम उठाया। सभी नवविचार के कलाकार धनवाद में परिवर्तन लाना चाहते थे। देलोने ने अपने चित्र 'वृतीय लय' के बारे में कहा- ''इन चित्रों द्वारा वस्तुनिरपेक्ष कला फ्रांस में जानी गयी।'' 1912 में मोन्द्रियान ने 'जिंजरपॉट व वस्तुचित्र', पुष्पित वृक्ष बनाये और आगे विकास करके उन्हांेने 1914 में 'अण्डाकार रचना' पूर्ण वस्तुनिरपेक्ष चित्र बनाया। अण्डाकार को विरोधी आकार के रूप में प्रयोग कर उन्होंने इस चित्र में, खड़ी व आढ़ी रेखाओं के मौलिक विसंवाद को सुरचित रूप दिया जिसके बारे में उन्होंने स्पष्टीकरण किया है''पौरूषेय व प्राकृतिक उच्च व प्रसृत।''वस्तुनिरपेक्ष कला के इतिहास में मन्द्रियान व कान्ड़िस्किदोनों का समान महत्व है। मन्द्रियान ने घनवाद के स्थायी रचनासौन्दर्य को वस्तुनिरपेक्षता की ओर विकसित किया तो कान्ड़िस्किने फाववाद व अभिव्यंजनावाद के भावपूर्ण गतित्व को वस्तुनिरपेक्षता की ओर मोड़ दिया। कान्ड़िस्कि की पुस्तक 'कला में आत्मिकता' कला को वस्तुसादृश्य के बंधन से मुक्त कराने में बहुत सहायक रही।

निष्कर्षः- वर्तमान कला क्षेत्र में समकालीनकला शब्द का प्रयोग खुले रूप में किया जा रहा है किन्तु कई विद्वानो के मतों के बीच मूल प्रश्न यह उठता है कि समकालीन कला की समयावधि का क्या समय रहा है? समकालीन कला, कला विचारों के किन रूपो में समाहित है? किन-किन कलाओं को इसमें शामिल किया जा सकता है? क्या यह निश्चित काल खण्ड़ों में परिवर्तित होती है? इन्ही सब जिज्ञासा को समाप्त करने का भरसक प्रयास इस लेख के माध्यम से किया गया है। साथ ही आधुनिकता में या समकालीन कला में एक ऐसी कला क्रान्ति'वस्तुनिरपेक्ष' के प्रादूर्भाव से लेकर विकास तक पर चर्चा की गयी है। वस्तुनिरपेक्ष कला द्वारा सभी

कलाकार अपनी अन्तरिक अनुभूतियों को किसी भी कठिनाई के बिना एक दूसरे के सम्मुख रख सकते है। कलाकार जहाँ जाता है अपने साथ अपनी सौन्दर्यपिपासा व सर्जनशक्ति को ले जाता है यही उसको सम्मान दिलाता है। बीसवी शताब्दी का समय विशेषकर 1907 से 1912 तक वस्तुनिरपेक्ष कला के लिए बहुत महत्पूर्ण रहा। कान्ड़िस्किव मोन्द्रियान इस कला के प्रणेता माने जाते है। इसके अतिरिक्त जैक्सन पॉलाक, दोलेने, लेगे का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कान्ड़िस्कि व मोन्द्रियान का इस क्षेत्र में समान स्थान है। बीसवी शताब्दी में फैली इस कला क्रान्ति को भिन्न शाखाओं व उपशाखाओं में विशाल वृक्ष का रूप प्राप्त हुआ, जिसका मूल स्त्रोत स्मृति रूप में अवशिष्ठ रहा। समसामायिक कला की इस शैली का रस ग्रहण करना प्रत्यक्ष व अधिक सरल है। वर्तमान विश्व कला के पटल पर वस्तुनिरपेक्ष कला अपने चमत्कृत प्रभाव से चहुँ ओर फैली हुई है। र्कइं कलाकार इस क्षेत्र में अनेक प्रयोगकर कला रचनाओं का वृद्ध संसार बसा रहें है।

संदर्भ-ग्रंथ सूचि

[1]. समकालीन कला अंक मई 1996।
[2]. कला और आधुनिक प्रवृत्तियाँ -रामचन्द्र शुल्क।
[3]. कला के मूल तत्व- डा0 चिंरजीलाल झा।
[4]. वृहद आधुनिक कोष, वाणी प्रकाशन।
[5]. कला त्रैमासिक सौन्दर्य 2002।
[6]. कला दीर्घा दृश्यकला की छमाही पत्रिका2002,।
[7]. 'क' कला सम्पदा एवं वैचारिक अंक मई-जून 2003,
[8]. Wikipedia.